2015-16

New Vision

July 2015

Issue:2

Multi Disciplinary Research Journal

New Vision

ISSN No. 2394-9996

New Vision

Multi-disciplinary Research Journal

July 2015

Online version : http://www.milliyaresearchportal.com

BEED

ANJUMAN ISHAT-E-TALEEM BEED

Anjuman Ishat -e- Taleem Beed's
Milliya Arts, Science & Management Science College,
Beed- 431122 (Maharashtra)
Website : www.milliyasrcollege.org
E-mail.ID : newvisionjournal@gmail.com

INDEX

Sr. No.	Paper Name	Name	Subject	Page No.
(01)	Social values versus political hypocrisy in Nayantara Sahgal's This Time of Morning	Dr. Abdul Anees Abdul Rasheed.	English	01
(02)	Depiction of aspirations and sanguine approach to life in Chetan Bhagat's Five Points Someone: What Not to do at IIT.	Dr. Shaikh Ajaz Perveen Mohd. Khaleeluddin	English	07
(03)	Post-Independence Indian English Fiction: Critical Assessment	Dr. Landage R. A. & Lahoti R. K.	English	12
(04)	The Nowhere Man - Gloomy Shadow of Marginal life in Adopted Society	Smt. Sasane S. S.	English	17
(05)	Portrayal of Upper - Caste Women in Mahesh Elkunchwar's 'Old Stone Mansion'	Dr. Manisha D. Sasane.	English	20
(06)	TREATMENT OF 'TIME' IN WILLIAM FAULKNER'S *THE SOUND AND THE FURY*	Mr. Kivne sandipan Tukaram	English	24
(07)	आधुनिक हिंदी - काव्य में गांधीवाद का प्रभाव	डॉ. मिर्झा असद बेग रूस्तुम बेग	हिंदी	27
(08)	दसवें दशक के लघु उपन्यासों का सामाजिक अध्ययन	प्रो. डॉ. पठाण ए.एम.	हिंदी	31
(09)	'हिंदी ग़ज़ल में समसामयिकता'	प्रा. मुजावर एस.टी.	हिंदी	34
(10)	मौलाना अबुलकलाम आजाद का भारतीय राजनीति में योगदान	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	हिंदी	36
(11)	चरित्र निर्माण की दृष्टिसे साहित्य की भूमिका: एक अध्ययन	प्रा. डॉ. द्वारका गिते - मुंडे	हिंदी	40

ISSN No. 2394-9996

आधुनिक हिंदी - काव्य में गांधीवाद का प्रभाव

डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग
हिंदी विभाग अध्यक्ष, मिल्लीया आर्ट सायंन्स ॲण्ड मॅनेजमेंट सायंन्स कॉलेज बीड.

विश्व साहित्य के इतिहास में मोहनदास करमचन्द गांधीजी का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है | विश्व साहित्य पर गांधी दर्शन का प्रभाव परीलक्षित होता है| महामानव महात्मा गांधी जी के विचार सत्य, अहिंसा, अस्तेय, परदुखकातरता, अपरिगृह आदि विचारां में विश्व मानव कल्याण है| महात्मा गांधीजी के विचारों मे सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि विचारों की झाँकी नजर आती है| महात्मा बुद्ध के बाद समाज में शांति एवं सद्भावना की माँग करनेवाले विचारक के रुप में महात्मा गांधीजी का नाम सर्वेपरी है|

महात्मा गांधीजी के विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्यपर भी दृष्टीगोचर होता है| महात्मा गांधी जी के विचरों का प्रभाव आधुनिक काव्य पर किस प्रकार पडा है इसी को बताना प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है| भारत देश धर्म निरपेक्षता पर आस्था रखनेवाला देश है| धर्म मानव को कर्तव्य करने की प्रेरणा देता है| यह एक नैतिक व्यवस्था है, जो व्यक्तिनिष्ठ न होकर देशकाल परे समष्टि परक है | गांधी जी धर्म की व्यापक दृष्टि से देखनेवाले महामानव थे| धर्म अलग-अलग ही सही मगर उसमें मूलतत्व मानवहित ही है वही सच्चा धर्म है जो लोक धर्म कहलाता है| गांधी जी कहते है - धर्म तो अलग - अलग रास्ते है जो एक ही जगह जाकर मिलते है| एक धर्म की विशेषता दूसरे धर्म की विशेषता के प्रतिकूल नहीं हो सकती | महात्मा गांधी जी के यही विचार मैथिली शरण गुप्त के काव्य में दिखाई देते है.

``धर्म तो सनातन है, सिद्ध वह आप है|
पुण्य सदा पुण्य तथा पाप सदा पाप है|
किंतु मूलधर्म सब काल सब देशों में,
एक - सा ही पाओगे अनेक भिन्न देशो में |``१

अंत: गांधीजी के विचारों मे मानव-कल्याण तथा जनहित निहीत दिखाई देता है, आज भी धर्म, जाति के नाम पर लडाई, दंगे आये दिन होते रहेते है| यह दूर करने हेतु गांधीजी के विचार महत्वपूर्ण है|

गांधी जी के रचनात्मक कार्य में महत्वपूर्ण कार्य साम्प्रदायिक एकता था| हिंदु-मुस्लीम का आपस में भेदभाव रखना समाज के लिए अहितकारी साबित हो रहा था| इसे जानकर ही महात्मा गांधीजी ने हिंदू-मुस्लीम भाईचारे को बढ़ावा देकर साम्प्रदायिक वैमनस्य का खात्मा करने का प्रयास किया| गांधी जी के सामाजिक एकता तथा धार्मिक समन्वयवादी, मानवतावादी जीवनदर्शन का प्रभाव हिंदी साहित्य

के आधुनिक कवियों के कविताओं में दिखाई देता है| सियाराम शरण जी की निम्न पंक्तियाँ इसी बात का प्रमाण है.

``हिंदु - मुसलमान दोनों ही
एक डाल के हैं दो फूल
और एक ही है दोनों का
बडा बनाने वाला मूल |``२

समाज व्यवस्था के सचलनार्थ भारतीय मनिषियों ने वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शुद्र चार वर्ण निश्चित किए गये | ये वर्ण मूलत: गुण कार्यानुसार थे मगर बाद में कर्म को गौण मानकर यह उत्तराधिकार के रुप में सौपें गये | गांधीजी ने अस्पृश्ता जैसी सामाजिक कुरीतियों के प्रति जीव्र विरोध दर्शाया | उनका मानना था कि अस्पृश्यता हिंदू जाति का कलंक है| यदि आत्मा पर विश्वास है तथा आत्मा एक है, ईश्वर एक है तो अच्छुत और अस्पृश्य कोई हो ही नही सकता | अत: गांधीजी इस बात पर जोर देते थे कि सारे वर्ण कर्मप्रधान होने के कारण समान रुप से पूज्य व समानाधिकारी है| ईश्वर के द्वार तो राजा, रंक, उँच-नीच, सभी के लिए समान भाव से खुले रहने चाहिए| इसी बात को कवि रामधारी सिंह दिनकर निम्न प्रकार प्रस्तुत करते है.

``आज दीनता को प्रभू की पूजा का भी अधिकार नी,
शबरी के जूठे बेरों से आज राम को प्रेम नहीं |
जागों बोधिसत्व| भारत के हरिजन तुम्हे बुलाते है|`` (३)

श्री शिवमंगलसिंह सुमन जी के विचारों पर भी यही विचारों का प्रभाव परलक्षित होता है|

``अपने ही भाई जिसको नित, थू थू कर दूर हटाते |
नर पशु समझ जिनको कुत्ते भी, भौंक भौंक कर दूर भगाते,
तिरस्कार, अपमान, घृणा, यह वह फिर भी जीता जाता,
हाय यह नही देखा जाता|`` (४)

महात्मा गांधीजी के विचार नारी के सम्बन्ध में समता प्रस्थापित करने वाले थे| उनका मानना था कि नारी मात्र चार दिवारी के अन्दर कैंद न होकर स्वतंत्रता संग्राम में पुरूषो के साथ खड़ी रह सकती है| मध्ययुगीन कालखंड में नारी को मात्र `भोग्या` के रुप में देखना गांधी जी के विचारों के काफी भिन्न है| उनका मानना था कि वैवाहिक जीवन उत्तम है किंतु पत्नी को मात्र भोग्या या वासना संतुष्टि का यन्त्र नही मानना चाहिए| सुतिमानंदन पंतजी ने भी यही विचार अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किये है.

``योनि नहीं है रे नारी वह भी मानव प्रतिष्ठित
उसे पूर्ण स्वाधीन करो वह रहेन नर पर अवसित|``५

बापूजी बालविवाह के विरोधी थे | वह बाल विधवा विवाह का सर्वथा उचित मानते थे | महात्मा गांधी जी का मानना था कि एक भी बालविधवा यदि अविवाहित रहे तो यह घोर अन्याय है, इसको मिटाना चाहिए| विधवा पुनर्विवाह जैसी महत्त्वपूर्व स्त्री मुक्ति की दास्ता को बापूजी ने पूर्णतया समर्थन दिया| इसी विचार से प्रभावित कवि श्रीधर पाठक लिखते है .....

``दु:खी बाल विधवाओं की जो है गती,
कौन सके बतला किसकी इतनी मती|

जिनको जीते जी दी गई तिलांजली,

उनकी कुछ हो दशा किसी को क्या पडी|`` ६

गांधी जी ने ब्रिटीश शासन से सक्रीय प्रतिरोध करने के लिए नैतिक मूल्यों की कसौटी पर कसने के उपरांत दो अस्त्र प्राप्त किये थे वे थे सत्याग्रह और असहयोग| गांधी जी का मानना था कि हिंसात्मक मार्ग से मानव-जाति का कल्याण नही हो सकता इसलिए अहिंसात्मक मार्ग से असह्योग करना जरुरी है| जिससे हमारे अधिकारों की रक्षा भी होगी और समाज में हिंसा भी नहीं फैलेगी गांधी जी के यही विचार हिंदी के कई कवियों में दिखाई देते है| ब्रिटीश शक्ति से जुझने के लिए असहयोग एकमात्र अवलम्ब उस समय था| जो कारगर साबित हुआ| इसलिए श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने `सत्यागृही का बयान` शीर्षक कविता में लिखा है कि.

``बाकी एक उपाय बचा था, जिसकी की गांधी ने याद,

शिघ्र अहिंसक असहयोग से मातृभूमि होवे आजाद|``७

महात्मा गांधी जी की विचारधाराओं का साध्य है स्वराज्य और यह स्वराज्य, सर्वोदय समाज की निर्मिती से हासिल हो सकता है| ऐसी उनकी धारणा थी| गांधीजी ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे | जो राष्ट्र समस्त भेद भावों से रहित जनता नैतिक मूल्यों से स्वत: नियंत्रित हो| अंत: गांधीजी का मानना था की उनके सर्वोदयी समाज में प्रेम, करुणा, अहिंसा, सत्य, संयम, असंग्रह, श्रमनिष्ठा, स्वावलंबन आदि की प्रतिष्ठा हो| स्वराज्य की नींव ही मूलत: प्रेम पर खडी है| यह स्वराज्य आज तक किस हद तक मिला है इसे प्रस्तुत किया है| रामधारी सिंह दिनकर जी ने वे कहते है कि

``पूछ रहा है यहाँ चकित हो, जन-जन देख अकाज,

पच्चीस वर्ष हो गये बीच में, अटका कहाँ स्वराज्य|``८

भारत कृषिप्रधान देश है, तथा किसान भारत देश कि नींव तथा आत्मा है| वर्तमान समाज में किसान तथा समान्त वर्ग में फासला बढ़ता गया| गांधीजी का मानना था कि यदि ग्रामविकास करना है तो किसानों को आत्मनिर्भर बनाना जरुरी है| आज का किसान अभावों में जीवनयापन कर रहा है| किसानों को बरबादी से हटाकर स्वाभिमानी जीवन की ओर अग्रसर करना चाहिए| क्यों कि किसान ही भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज व्यवस्था का मेरुदण्ड है| गांधी जी ने स्वराज्य प्राप्ति हेतु जो जन आंदोलन खड़ा किया था उसमें ग्राम जागरण की ओर विशेष ध्यान दिया था| उस समय के किसान भी आज की तरह अभावों में जी रहे थे तथा आत्महत्या कि ओर अग्रेसर हो गये थे | जिसकी दीन-हिन दशा का अंकन सनेहीं जी के काव्य में देखा जा सकता है|

``नहीं मिलती हमे पेट भर रोटी,

न जुड़ता कपड़ा सिवा एक लगोटी|

बनी झोपडी मांद से भी है छोटी

कहें और क्यों अपनी किस्मत है खोटी|``९

गांधीजी ने किसानों की दीन-हीन दशा को दूर करना चाहा साम्राज्यवादी तथा पूंजीपतियों से भी यह आशा की थी कि वह अपनी शोषक वृत्ती को छोड़कर किसानों एवं भूमिहिन को रियायत दें| मगर दु:ख इस बात का है कि आज भी स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् किसान अपनी स्थिति से बाहर नही आये|

आज भी उनकी शोषन से मुक्ति नहीं हो पायी| इसी बात को कवि भवानी प्रसाद जीने गांधी पंचशती के अवसर पर सवाल उठाते हैं.

``मेरे किसान युग बीत गये, गीतों की बात नहीं करते,
वर्षो में जिनके छांह नही, जाडे में जिनके आग नही|
दो वक्त पेट भर खाले ऐसे भी उनके भाग नही;
जी इतने डूबे है दु:ख में जो कभी खोलकर रो न सके|``(१०)

उपयुक्त विवेचन के आधरपर यह स्पष्ट होता है कि, महात्मा गांधी जी के विचार, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि दृष्टी से काफी महत्त्वपूर्ण थे| जिसकी आज भी हमे अत्यंत आवश्यकता है| इसके साथ ही साथ स्वदेशी, ग्रामसंधार, ग्रामउद्योग, खादी, चरखा आदि उनके विचारों की देन है| भारत देश इस महानुभव आत्मा का ऋणी रहेगा|

संदर्भ-सूची

१) मैथिलीशरण गुप्त, अनघ, पृ. ८
२) डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा, हिंदी साहित्य में गाधी चेतना, पृष्ठ १५८
३) रामधारी सिंह दिनकर, (बुद्धदेव शीर्षक कविता)
४) शिवमंगलसिंह सुमन, जीवन के गाव, पृ १०९
५) सुमित्रानंदन प्रत, ग्राम्या, पृ. ८५
६) श्रीधर पाठक, मनोविनोद, पृ. ७६
७) डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा, हिंदी साहित्य में गांधी चेतना, पृ.क्र. १८६
८) वही पृ. क्रमांक १९२
९) वही पृ. क्रमांक १९३
१०) भवानी प्रसाद मिश्र, गांधी पंचशती, पृ. २३.